64

संवाद की आवश्यकता

(15:14-29)

संसार में आज की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक संवाद को माना गया है।[1] मैंने विवाहित दम्पत्तियों को यह कहते सुना है, ''मेरा पति/मेरी पत्नी मेरे साथ बात नहीं करता/करती।'' मैं कई ऐसे अभिभावकों को जानता हूं, जो अपने बच्चों से बेहतर संवाद या बातचीत को तरसते हैं। कर्मचारी शिकायत करते हैं कि उन्हें वास्तव में पता नहीं है कि उनके नियोक्ता उनसे क्या उम्मीद करते हैं। कलीसिया के लोग कहते हैं, ''काश कलीसिया के अगुवे हमारे साथ बेहतर संवाद करें।''

संवाद या संप्रेषण के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''communicate'' लातीनी भाषा से निकला है, जिसका मूल अर्थ ''साझे का होना'' है। इसका यूनानी समानांतर शब्द *koinonia* है।[2] ये वे रूप हैं, जो रोमियों 15:14-29 में दो बार मिलते हैं (आयत 26 में इसका अनुवाद ''योगदान'' और आयत 27 में ''भागी हुए'' है)। आज हम ''संवाद'' शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर *मौखिक* भागीदारी के लिए करते हैं। प्रभावकारी *मौखिक* संवाद विचारों की भागीदारी अर्थात विचारों के ''साझा'' होने से होता है। केवल इसी तरह से हमें पता चल सकता है कि किसी दूसरे व्यक्ति का विचार क्या है।

''उसके पदचिह्नों पर (15:1-13)'' पाठ के साथ रोमियों के नाम पौलुस के पत्र से मुख्य भाग का हमारा अध्ययन पूरा हो गया। हमारी रूपरेखा में पत्र के शेष भाग को केवल ''निष्कर्ष'' का नाम दिया गया है। (इस पुस्तक में दी गई ''रोमियों की एक रूपरेखा'' देखें।) पौलुस की सबसे लम्बी पुस्तक के लिए योग्य होने के कारण यह उसके किसी भी अन्य पत्रों से सबसे लम्बा निष्कर्ष है। हमें ध्यान रखना होगा कि हम उन बातों को, जिनमें हमारी दिलचस्पी नहीं है, यही मानकर इन अन्तिम टिप्पणियों को नकार न दें। परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा लिखी पौलुस की हर बात से हमें कुछ न कुछ सीखने को ही मिलता है।

इन आयतों को लिखते हुए, जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं, पौलुस ने रोम के मसीही लोगों के साथ एक विस्तृत जानकारी में भागीदारी की। यह देखकर कि पौलुस ने अपने पाठकों के साथ संवाद कैसे किया हम संवाद की कला के बारे में कुछ जान सकते हैं।

विचारों को साझा करें (15:14-19क)

दूसरों की तारीफ़ करें

अध्याय 1 में पौलुस ने रोम की कलीसिया की सराहना की: ''पहले मैं तुम सब के लिए यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है'' (आयत 8)। इस वाक्य के बाद उन आरम्भिक मसीही लोगों को दी गई पौलुस की

शिक्षा और ताड़ना एक के बाद एक अध्याय में मिलती है। उसे मालूम था कि इससे यह प्रभाव जाएगा कि वह उनके विश्वास से *प्रभावित* नहीं था। पत्र के अन्त के निकट पहुंचने पर वह अपने पाठकों को पुन: आश्वासन देना चाहता था कि अभी भी उसके मन में उनके लिए बड़ा सम्मान है: ''हे मेरे भाइयो; मैं आप भी तुम्हारे विश्वास में निश्चय जानता हूं, कि तुम भी आप ही भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर हो और एक दूसरे को चेता सकते[3] हो'' (15:14)।[4]

''भलाई से भरे'' का अर्थ यह नहीं है कि वे पाप रहित थे (देखें 3:23), बल्कि यह है कि वे आवश्यक रूप में अच्छे लोग थे। ''ज्ञान से भरपूर'' का अर्थ यह नहीं है कि उन्हें सब कुछ मालूम था (यानी वे सर्वज्ञानी थे), बल्कि यह कि उन्हें सुसमाचार की बुनियादी बातों की अच्छी समझ थी। रोम के मसीही लोगों के बारे में पौलुस को ये बातें कहां से पता चलीं? उसे कलीसिया की प्रतिष्ठा का पता था (1:8; 16:19) और वह कई सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से जानता था (16:3-15)। इसके अलावा उसे आत्मा से भी समझ थी।

संवाद पर आरम्भिक सबकों में से एक सबक यह है कि प्रशंसा व्यक्त करने का महत्व है। भले कामों के प्रति लापरवाह होना आसान है। पौलुस अपने भाइयों में सामर्थ ढूंढ़ता था और उनकी खूबियों के लिए उनकी प्रशंसा करता था। उसके अधिकतर पत्रों के परिचय में प्रशंसा के साथ आरम्भ किया गया है। मुझे और आप को दूसरों में सकारात्मक गुणों को देखने और सीखने की आवश्यकता है। फिर हमें यह कहना सीखना चाहिए कि ''मैं तुम से प्रेम करता हूं, मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूं।''

पौलुस ने आगे कहा, ''तौ भी मैंने कहीं-कहीं याद दिलाने के लिए तुम्हें जो बहुत साहस करके लिखा ...'' (15:15क)। पौलुस की बेहतरीन बात को कितने अद्‌भुत ढंग से कम करके दिखाया गया है: ''मैंने कहीं-कहीं ... लिखा''! पौलुस ने कहा कि उसने उन्हें वे बातें ''बहुत साहस करके'' लिखीं। ''बहुत साहस करके'' *tolmao* के विशेषण रूप से लिया गया है जिसका अर्थ ''हिम्मत करना,'' ''मान लेना'' है।[5] 15:18 में *tolmao* का अनुवाद ''साहस'' किया गया है।

यदि रोम के मसीही लोग ''सारे ज्ञान से भरपूर'' थे और ''एक-दूसरे को चिता सकते'' थे तो पौलुस ने उन्हें साहस करके क्यों लिखा? उसने इसके दो कारण बताए। पहला तो ''[उन्हें] याद दिलाने के लिए'' था (15:15ख)। मुझे विश्वास है कि उन्होंने ऐसा सुसमाचार कभी नहीं सुना था जैसे पौलुस ने इसे बताया, पर वे बुनियादी सज्जाइयों से अवश्य अवगत होंगे:

- हम सब पापी हैं जिन्हें परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है।
- मसीह की मृत्यु ने हमारे लिए उद्धार सम्भव बनाया।
- हमारे उद्धार के बाद परमेश्वर हम से अलग प्रकार का जीवन जीने की उम्मीद करता है।
- परमेश्वर ने स्वर्ग में हमारे लिए अद्‌भुत बातें रखी हैं।

ये सच्चाइयां ''याद दिलाते हुए'' पौलुस उन्हें समझ की नई गहराइयों में ले गया।

हम सब को बीच-बीच में बाइबल की बुनियादी सच्चाइयां याद दिलाई जानी आवश्यक है।

याद दिलाना नये नियम के प्रचार तथा शिक्षा का महत्वपूर्ण ढंग है (उदाहरण के लिए देखें 2 पतरस 1:12-15; 3:1)। सुसमाचार के प्रचारकों को सुसमाचार की मुख्य सच्चाइयां अपने पाठकों को याद दिलाने में कभी अफसोस नहीं होना चाहिए,[6] और मसीही लोगों को कभी यह कहने में शर्म नहीं करनी चाहिए कि ''पर हमने पहले यह सब सुना था। हम कुछ *नया* चाहते हैं।''[7]

उन्हें इतने साहस के साथ लिखने के लिए पौलुस का दूसरा कारण यह था कि उसे अन्यजातियों का प्रेरित होने का काम दिया गया था। उसने कहा, ''मैंने ... तुम्हें बहुत साहस करके लिखा। यह उस अनुभव के कारण हुआ, जो परमेश्वर ने मुझे दिया है कि मैं अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का सेवक[8]'' बनूं (रोमियों 15:15, 16क; देखें 1:5; 11:13)। रोम अन्यजाति संसार का राजनैतिक केन्द्र था इसलिए यह उचित था कि वह उस नगर पर असर दिखाए।

अन्यजातियों के लिए अपनी सेवकाई का वर्णन करते हुए पौलुस ने इस याजक के बलिदान भेंट करने के रूपक का इस्तेमाल किया: ''परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा[9] याजक के समान करें, जिससे अन्यजातियों का मानो चढ़ाया जाना, पवित्र आत्मा से पवित्र बनकर ग्रहण किया जाए'' (15:16ख)। पौलुस ने सुसमाचार के अपने प्रचार और अन्यजातियों को परिवर्तित करने की तुलना पुराने नियम के याजक द्वारा तैयार होकर बलिदान भेंट करने के ढंग से की (रोमियों 12:1)। अन्यजातियों को बपतिस्मा लेने पर उन्हें पवित्र आत्मा मिलता था (प्रेरितों 2:38) और उन्हें पवित्र किया जाता (अलग किया जाता) था (रोमियों 6:3, 4, 17, 18, 22)। इस प्रकार पौलुस का परमेश्वर से ''भेंट करना'' ''पवित्र आत्मा से पवित्र [परमेश्वर के लिए अलग] किया गया।''

प्रभु की सेवा का आपका जो भी दायरा है, उसे किए जाने वाले काम के रूप में नहीं, बल्कि अपने स्वर्गीय पिता को दी जाने वाली प्रेम भेंट के रूप में देखें। मसीही बन जाने पर आप ''राज पदधारी याजकों के समाज'' का हिस्सा बन गए (1 पतरस 2:9)।

महिमा परमेश्वर को दें

अन्यजातीय संसार तक पहुंचने में पौलुस की सफलता उसे घमण्ड से भर सकती है, पर उसने अपना ध्यान परमेश्वर को महिमा देने पर लगाया। उसने कहा, ''सो उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, मैं मसीह यीशु में बड़ाई[10] कर सकता हूं'' (रोमियों 15:17)। बाइबल व्यक्ति प्राप्ति पर शेखी मारने पर हतोत्साहित नहीं करती हैं (देखें गलातियों 6:14), पर ''परमेश्वर से सम्बन्ध रखना'' सही रहता है।

पौलुस ने आगे कहा, ''क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का हियाव नहीं, जो मसीह ने ... मेरे ही द्वारा किए'' (रोमियों 15:18क, 19ख)। यदि हम किसी काम में सफल हो जाएं तो घमण्ड आने का प्रलोभन रहता ही है। यह मानते हुए कि काम उपयोगी था और पूरा हो गया, हमें यह समझना आवश्यक है कि अवसर और उस अवसर का लाभ उठाने की योग्यता देने वाला प्रभु ही था। पौलुस ने वह नहीं कहा, जो *उसने* किया था बल्कि वह कहा जो *उसके द्वारा* मसीह ने किया था (प्रेरितों 14:27 से तुलना करें)।

मसीह ने पौलुस के द्वारा क्या किया *था?* प्रभु की सामर्थ से पौलुस के प्रयासों से ''अन्यजातियों की अधीनता'' हुई थी (रोमियों 15:18ख)। कई लेखक यहां ''अधीनता'' शब्द से चकित होते हैं।

वे कहते हैं कि उन्हें पौलुस के ''विश्वास'' शब्द का इस्तेमाल करने की उम्मीद होगी। परन्तु यह वाक्यांश उन लोगों के लिए चकित करने वाला नहीं है, जो समझते है कि उद्धार दिलाने वाला विश्वास आज्ञाकारी विश्वास है (देखें 1:5; 16:26)।

''अन्यजातियों की अधीनता ... वचन और कर्म'' से हुई थी (रोमियों 15:18ग)। यानी यह उसका परिणाम था जो सुसमाचार के प्रचार में पौलुस ने *कहा* था और जो उसने प्रचार के अनुसार जीवन बिताकर *किया* था। NIV में ''जो कुछ मैंने कहा और किया उसके द्वारा अन्यजातियों के परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए अगुआई देकर'' है।

एक बात जो मसीह ने पौलुस को करने के योग्य बनाया था वह ''चिह्नों और अद्‌भुत कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से'' (आयत 19क) बढ़ते जाना है।[11] इन शब्दों में पहली शताब्दी के आश्चर्यकर्मों के तीन पदनाम ''सामर्थ'' (*dunamis* से), ''चिह्न'' (*semeion* का बहुवचन) और ''अद्‌भुत कामों'' (*teras* का बहुवचन) थे। 2 कुरिन्थियों 12:12 में पौलुस ने कहा कि असली ''प्रेरित के लक्षण ... चिह्नों [*semeion* का बहुवचनी] और अद्‌भुत कामों [*teras* का बहुवचन] और सामर्थ के कामों [*dunamis* से] में'' थे। ''चिह्नों'' उन आश्चर्यकर्म को कहा गया जो यह दिखाते थे कि परमेश्वर उन चिह्नों को करने वाले के साथ (इब्रानियों 2:3, 4)। आश्चर्यकर्मों को ''अद्‌भुत काम'' कहा जाता था क्योंकि उन्हें देखने वाले आश्चर्य और भय से भर जाते थे (देखें मरकुस 2:12)। ''सामर्थ'' शब्द इस बात पर ज़ोर देता है कि आश्चर्यकर्म प्रभु की सामर्थ एक अभिव्यक्ति थी। डब्ल्यू. ई. वाइन ने लिखा है, ''चिह्न समझ को आकर्षित करने के उद्देश्य से, 'अद्‌भुत काम' कल्पना को आकर्षित करने, सामर्थ ... इसके देने वाले के अलौकिक होने का संकेत है।''[12]

''पवित्र आत्मा की सामर्थ को'' वाक्यांश सम्भवतया पौलुस का इस बात को मानना है कि पवित्र आत्मा ही था, जिसने उसे आश्चर्यकर्म करने के योग्य बनाया। यदि यह अतिरिक्त विचार के रूप में चाहा गया था तो इसका अर्थ आत्मा की प्रेरणा से दिया गया पौलुस का प्रचार हो सकता है। पौलुस ने अपनी प्राप्ति के लिए कोई व्यक्तिगत श्रेय नहीं लिया। हर प्राप्ति उसमें *परमेश्वर के* काम करने का परिणाम था।

दूसरों के साथ संवाद करते हुए उन्हें वह सब बताना सही है, जो आपने किया होगा। परन्तु किसी भी सफलता के लिए परमेश्वर को महिमा देना न भूलें।

अपने तर्कों को साझा करें (15:19ख-22)

पत्र की आरम्भिक पंक्तियों में पौलुस ने रोम के लोगों को बताया, ''हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इससे अनजान रहो कि मैंने बार-बार तुम्हारे पास आना चाहा (परन्तु अब तक रोका गया)'' (रोमियों 1:13क)। अपने पत्र की समाप्ति के निकट आने पर उसने समझाया कि उसे किसने रोका था। 15:22 में आगे एक झलक देखें: ''इसी लिए मैं तुम्हारे पास बार-बार आने से रुका रहा।''

जो पौलुस ने किया था

पौलुस का बुनियादी कारण यह था कि उसे पश्चिमी भाग में जाने से पहले रोमी साम्राज्य के पूर्वी भाग में अपने मिशन को पूरा करना था। अन्त में उसने विचार किया कि काम पूरा हो गया है। उसने कहा, ''मैं ने यरूशलेम से[13] लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम[14] तक मसीह के सुसमाचार का पूरा-पूरा प्रचार किया'' (आयत 19ख)। इल्लुरिकुम उत्तर में मकदुनिया की सीमा पर अदरिया समुद्र पर रोमी इलाका था। (पृष्ठ 135 पर *पौलुस के रोमियों की पत्री लिखने के समय का रोमी साम्राज्य* मानचित्र देखें।) इसमें दलमतिया का इलाका भी शामिल था (देखें 2 तीमुथियुस 4:10)। प्रेरितों के काम में पौलुस के इल्लुरिकुम में प्रचार करने का कोई रिकॉर्ड नहीं था। पर याद रखें कि प्रेरितों के काम पुस्तक का लेखक लूका पौलुस के काम को चुन-चुन कर बताता है। ऐसा प्रयास प्रेरितों 20:1, 2 की शब्दावली से मेल खाना था। बेशक ''इल्लुरिकुम तक'' शब्दों का अर्थ केवल ''इल्लुरिकुम की सीमा तक'' हो सकता है। पौलुस केवल इतना कह रहा था कि ''मैंने इस *पूरे* इलाके में प्रचार किया है।'' अमेरिका में इसी विचार को हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं, ''मैंने लॉस एंजलिस से न्यू यॉर्क तक प्रचार किया है।''[15]

पौलुस के यह कहने का क्या अर्थ था कि उसने उस पूरे इलाके में ''सुसमाचार पूरी तरह सुना दिया'' था? उसके कहने का यह अर्थ नहीं था कि उसने हर राज्य के हर पुरुष, स्त्री, लड़के और लड़की को वचन सुना दिया। बल्कि उसके कहने का अर्थ यह था कि प्रचार के द्वारा उसने अलग-अलग इलाकों में बड़ी जनसंख्या में कलीसियाएं स्थापित कर दी थीं। फिर उसने उन मण्डलियों को अपने आस पास के छोटे नगरों तथा गांवों में सुसमाचार प्रचारक भेजने का काम सौंपा था।

इस प्रकार पौलुस ने बताया कि जो कुछ वह कर रहा था, वह संवाद का एक महत्वपूर्ण अंग है। नीचे दिया गया दृश्य कई लोगों का जाना पहचाना है:[16]

> मां: ''कहां गया था?''
> नवयुवक: ''बाहर।''
> मां: ''तू ने क्या किया?''
> नवयुवक: ''कुछ नहीं।''

यह संवाद या कम्युनिकेशन *नहीं* है।

पौलुस ने यह क्यों किया

संवाद के गहरा होते जाने से इसमें न केवल वह शामिल होता है, जो हमने किया, बल्कि यह भी होता है कि इसमें हमने क्यों किया। 20 और 21 आयतों में पौलुस ने अपने व्यक्तिगत ''प्रचार के ढंग'' को गहराई से बताया:

> पर मेरे मन की उमंग[17] यह है, कि जहां-जहां मसीह का नाम नहीं लिया गया, वहीं सुसमाचार सुनाऊं; ऐसा न हो, कि दूसरे की नेंव पर घर बनाऊं। परन्तु जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं पहुंचा, वे ही देखेंगे और जिन्होंने नहीं सुना वे ही समझेंगे।

पौलुस का लक्ष्य सुसमाचार प्रचार करने में अगुआ होना, पहले से अस्तित्व में मण्डलियों के साथ काम करने के बजाय नई मण्डलियां स्थापित करना था। एक प्रसिद्ध टीवी और फिल्म शृंखला से एक पंक्ति लें तो पौलुस की इच्छा दिलेरी से वहां जाने की थी जहां पहले कोई सुसमाचार प्रचार नहीं किया गया था।[18] वह आयत जिससे उसने उद्धृत किया (रोमियों की पुस्तक में पुराने नियम का अन्तिम हवाला है) यशायाह 52:15 से लिया गया है। यशायाह 52 दुखी सेवक का भजन है। आयत 15 दुखी सेवक (मसीह) के ऊंचा उठाए जाने को देखने पर जातियों और राजाओं के आश्चर्य का अनुमान लगाती है। यह शब्द पौलुस के शुभ समाचार को उनके पास ले जाने के लिए उसके उद्देश्य को दर्शाते हैं। जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया और ''उन्होंने अभी तक सुना भी न था।''

पौलुस यह सुझाव नहीं दे रहा था कि प्रचार के उसके ढंग को हर प्रचारक अपना लें। अलग-अलग लोगों को परमेश्वर की ओर से अलग-अलग दान मिले हैं (देखें रोमियों 12:4-6क)। 1 कुरिन्थियों 3:6 में पौलुस ने अपने काम को दूसरे के काम से अलग बताने के लिए कृषि की भाषा का इस्तेमाल किया था, उसने कहा कि उसने कुरिन्थुस में पौधा लगाया था और अपुल्लोस ने उसे पानी दिया था। उसी अध्याय की आयत 10 में उसने रोमियों 15:20 के कृषि के रूपक का इस्तेमाल किया: ''मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली और दूसरा उस पर रद्दा रखता है।'' बहुत से प्रचारक स्थापित मण्डलियों के साथ काम करके उन्हें आत्मिक रूप में और संख्या में बढ़ाने में सहायता के लिए बड़े उपयुक्त होते हैं। तौ भी हमें ''पौलुसों'' की आवश्यकता है, जिनकी नज़रें उन नये खेतों पर हों जहां राज्य का बीज बोया जाना है। पचास साल पहले रुएल लैमन ने लिखा था, ''दस हज़ार लोगों के लिए जो स्थापित और कायम कलीसियाओं के लिए प्रचार करते हैं अपना सामान लेकर किसी ऐसी जगह जाने पर जहां किसी को सुसमाचार पता नहीं हो, स्वर्गदूत कितने आनन्दित होंगे!''[19]

पौलुस ने बताया, ''इसी लिए मैं तुम्हारे पास आने से बार-बार रुका रहा'' (आयत 22), यानी ऐसे बहुत से नये इलाके थे जहां प्रभु चाहता था कि वह जाए। यह बताकर कि हम जो करते हैं वह *क्यों* करते हैं हम संवाद या कम्युनिकेशन की हर समस्या का समाधान नहीं कर देंगे, पर इससे सहायता अवश्य मिलेगी।

अपनी योजनाएं बताएं (15:23-29)

यह बताने के बाद कि उसने क्या किया और क्यों किया, पौलुस ने बताया कि उसने क्या करने की योजना बनाई थी और उसके पाठक उन योजनाओं में कैसे शामिल थे। उसने आरम्भ करते हुए कहा, ''परन्तु अब मुझे इन देशों में और जगह नहीं रही'' (आयत 23क)। ''इन देशों'' यरूशलेम और इल्लुरिकुम के बीच के सारे इलाके को कहा गया। पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि अब कोई जगह नहीं बची थी जहां वह उस साम्राज्य के भाग में प्रचार कर सकता या उन इलाकों में अब कोई सुसमाचार सुनाने की आवश्यकता नहीं थी। उसके कहने का अर्थ केवल इतना था कि उसने भूमध्य संसार के पूर्वी भाग में अपनी निराली सेवकाई पूरी कर ली थी।

रोम जाने की इच्छा

फिर पौलुस ने अपने पाठकों को उनके पास जाने की इच्छा बताई। उसने कहा, ''और बहुत वर्षों से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा[20] है'' (आयत 23ख)। पहले उसने कुरिन्थियों को बताया था कि उसकी इच्छा थी कि ''हम तुम्हारी सीमा से आगे बढ़कर सुसमाचार सुनाएं'' (2 कुरिन्थियों 10:16)। इफिसुस में रहते हुए उसने कहा था, ''मुझे रोम को भी देखना अवश्य है'' (प्रेरितों 19:21)। अब वह पश्चिम में जाने की पक्की योजनाएं बना रहा था। उसने कहा, ''इसलिए जब स्पेन को जाऊंगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊंगा क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम से भेंट करूं और जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ भर जाए'' (रोमियों 15:24)।

पौलुस की योजनाएं स्पेन जाने की थीं पर पहले वह मिलने के लिए रोम में रुकना चाहता था। काम करने का उसका केन्द्र सीरिया के अन्ताकिया में था (प्रेरितों 13:1-3; 14:26-28), परन्तु स्पेन और भूमध्य सागर से पश्चिमी जगत के अन्य देश अन्ताकिया से बहुत दूर थे। अधिकतर लेखकों का मानना है कि पौलुस पश्चिम में सुसमाचार पहुंचाने के लिए काम का अपना केन्द्र रोम को बनाना चाहता था।

रोम की कलीसिया स्थापित थी और अपने विश्वास के लिए विश्वव्यापी तौर पर जानी जाती थी (रोमियों 1:8)। ''किसी दूसरे की नींव पर बनाने'' (15:20) पौलुस की कोई इच्छा नहीं थी इसलिए उसने रोम में ठहरने की योजना नहीं बनाई, बल्कि ''जाते-जाते'' मसीही लोगों से मिलना था। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उसने रोम में रात भर ही रुकना था। वह ''कुछ देर के लिए'' अपने भाइयों और बहनों की संगति का आनन्द लेना चाहता था ताकि वह उन्हें अपनी यात्रा आगे बढ़ाने से पहले उन्हें कुछ आत्मिक दान देकर विश्वास में प्रोत्साहित कर सके (1:11, 12)।

पौलुस को रोम के मसीही लोगों द्वारा स्पेन जाने से ''की [अपनी] यात्रा में सहायता मिलने'' की उम्मीद थी। इसके लिए ''की यात्रा में सहायता मिलने'' *propempo* से लिया गया है जिसका अर्थ ''पहले भेजना'' (*pro* [''पहले''] और *pempo* [''भेजना'']। पौलुस के समय में *propempo* का विशेष अर्थ था।

> क्रिया ... मिशनरी लोगों को उनके मार्ग में सहायता के लिए लगभग एक तकनीकी मसीही शब्द बन चुका [था]। नि:संदेह इसका अर्थ शुभ इच्छाओं से और ... प्रार्थना से बढ़कर था। अधिकतर मामलों में उन्हें सामान और धन देना होता था और कई बार कम से कम थोड़ी दूर उनके साथ जाने के लिए उनके आगे-आगे चलने के साथ-साथ कुछ चीज़ें देना होता था।[21]

यूनानी लैक्सिकन में *propempo* की परिभाषा ''सफ़र में, भोजन, धन, साथियों, यात्रा के साधन का प्रबन्ध करके ... *भेजना*'' के रूप में होता था।[22]

यरूशलेम जाने की आवश्यकता

पौलुस कुरिन्थुस से लिख रहा था जो इटली से अदरिया समुद्र के थोड़ा पार था। उसकी रोम देखने की बड़ी इच्छा थी इसलिए उससे पूछा गया हो सकता है, ''यदि तुम्हारा काम खत्म हो गया है, तो तुम यहां क्यों नहीं आए?'' (पौलुस को रोम पहुंचने के लिए उससे अधिक समय नहीं लगना

था, जितना उसका पत्र पहुंचने के लिए लगा।) परन्तु तुरन्त रोम जाने के बजाय पौलुस ने पहले विपरीत दिशा अर्थात पूर्व में यरूशलेम को जाने की योजना बनाई, जिससे उसका सफ़र दो हज़ार मील और बढ़ जाना था। पौलुस बताना चाहता था कि वह क्या कर रहा था और क्यों कर रहा था। उसने कहा, ''परन्तु अभी तो पवित्र लोगों की सेवा करने के लिए यरूशलेम को जाता हूं।[23] क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह अच्छा लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिए कुछ चंदा[24] करें'' (15:25, 26)।

दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं में पौलुस यरूशलेम में ले जाने के लिए चंदा इकट्ठा कर रहा था। कई साल पहले उसने अन्ताकिया के चेलों से चंदा लेकर यहूदिया के ऐल्डरों तक पहुंचाने में सहायता की थी (प्रेरितों 11:27-30; 12:25)। अब वह ''पवित्र लोगों की सेवा के लिए यरूशलेम को'' चंदा ले कर जा रहा था। यरूशलेम नगर अपनी सम्पत्ति के लिए प्रसिद्ध था और वहां के मसीही लोग आम लोगों से गरीब होंगे।[25] कहा जाता है कि ''यरूशलेम में रहते हुए मसीही होना और निर्धन होना एक ही बात थी।''[26]

हमें नहीं मालूम कि यरूशलेम में लोगों के लिए चंदा करने का विचार कब, कहां या कैसे बना। क्या इसका बीज तब बोया गया, जब पौलुस और बरनबास याकूब, पतरस और यूहन्ना से मिले थे? यरूशलेम के उन अगुओं ने पौलुस और बरनबास से ''कंगालों की सुधि'' लेने को कहा था। पौलुस ने लिखा कि ''उसी काम को करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था'' (गलातियों 2:10)। यदि यह विचार पौलुस की सोच थी तो अन्यजाति मसीहियों और यहूदी मसीहियों के सम्बन्ध कितने सुधर सकते थे? जो भी हो इस योजना को मान लिया गया, इसलिए हम आश्वस्त हो सकते हैं कि पवित्र आत्मा भी उसमें शामिल था।

इस चंदे के बारे में हमें जो कुछ पता चलता है वह 1 कुरिन्थियों 16:1-4 और 2 कुरिन्थियों 8:1-9:15 के अलावा हमारे इस वचन पाठ से मिलता है। पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में कलीसियाओं को धन इकट्ठा करने के लिए प्रोत्साहित किया; अपनी तीसरी यात्रा में (जो अब लगभग पूरी हो चुकी थी), वह धन इकट्ठा कर रहा था। रोमियों 15:26 में उसने विशेष तौर पर मकिदुनिया और अखया[27] के देशों से आने वाली सहायता का उल्लेख किया। क्योंकि वह उसके परिश्रम के बिल्कुल नये खेत थे। हमें यह भी मालूम है कि इस परियोजना में गलातिया की मण्डलियां शामिल थीं (देखें 1 कुरिन्थियों 16:1) और सम्भवतया अखया के मसीही लोगों ने भी भाग लिया था (प्रेरितों 20:4[28])।

यह कहने के बाद कि ''मकिदुनिया और अखया के लोगों को अच्छा लगा कि पवित्र लोगों में निर्धनों के लिए चंदा करें'' (रोमियों 15:26), पौलुस ने कहा, ''उन्हें अच्छा तो लगा, परन्तु वे उन के कर्जदार भी हैं'' (आयत 27क)। अन्यजाति मसीही यहूदी मसीहियों के *कर्जदार* थे? यह कैसे हो सकता है। पौलुस ने आगे कहा, ''क्योंकि यदि अन्यजाति उन की आत्मिक बातों में भागी हुए,[29] तो उन्हें भी उचित है, कि शारीरिक बातों में उन की सेवा करें'' (आयत 27ख)। सुसमाचार पहले यहूदियों को सुनाया गया था (प्रेरितों 2:5, 14-36)। फिर यह यहूदी प्रचारक ही थे, जिन्होंने सुसमाचार को अन्यजातियों तक पहुंचाया। इन में से पतरस (प्रेरितों 10:1-11:18) और पौलुस प्रमुख थे। पौलुस का तर्क था कि यहूदी लोगों ने अन्यजातियों के साथ अपनी आत्मिक आशिषें साझा की थीं इसलिए उचित था कि अन्यजातियां यहूदियों के साथ अपनी भौतिक आशिषों

को साझा करें।

पौलुस ने चंदे को ऐसी चीज़ कहा जिसे अन्यजाति मसीही करना *चाहते* थे (''उन्हें अच्छा लगा'') और ऐसी चीज़ भी कहा जिसे करना उनकी *जिम्मेदारी* था। (वे यहूदी मसीहियों के ''कर्ज़दार'' थे।) कोई काम ज़िम्मेदारी और ऐसी चीज़ कैसे हो सकता है जिसे कोई इसलिए करता है क्योंकि वह करना चाहता है? डग्लस जे. मू ने माता-पिता होने का एक उदाहरण सुझाया।[30] माता-पिता के रूप में मुझे अपने बच्चों की देखभाल करने की ईश्वरीय जिम्मेदारी दी गई है; क्योंकि मैं उन से प्रेम करता हूं, इसलिए मैं इस ज़िम्मेदारी को आनन्द से पूरा करता हूं (मुझे इसे करना ''अच्छा लगता'' है)।

रोमियों 15:26, 27 पढ़ें जिसकी रोशनी में पौलुस ने यहूदियों और अन्यजातियों के एक दूसरे को ग्रहण करने के बारे में कुछ आयतें लिखीं (आयतें 7-13)। यरूशलेम में चंदा ले जाने का उसका उद्देश्य केवल मानवीय कष्ट को दूर करना ही नहीं था। वह यहूदी मसीहियों और अन्यजाति मसीहियों के बीच सम्बन्ध सुधारना चाहता था। वह कलीसिया के इन दोनों गुटों के बीच एक दूसरे के लिए प्रेम देखना चाहता था (देखें 2 कुरिन्थियों 9:12-14)।

स्पेन की प्रस्तावित यात्रा

जैसे पौलुस रोम के भाइयों को देखने का इच्छुक था, वैसे ही यरूशलेम के यहूदी मसीहियों के लिए चंदा भी इतना आवश्यक था कि वह इस कार्य को फलवंत करने के लिए स्वयं लेकर जाना चाहता था। इस काम को पूरा करने पर उसने निश्चिंत होकर रोम जाना था। उसने कहा, ''सो मैं यह काम पूरा करके और उन को यह चंदा सौंप कर[31] तुम्हारे पास होता हुआ इसपानिया को जाऊंगा'' (रोमियों 15:28)।

प्रेरितों 20:4 से हमें पता चलता है कि पौलुस यरूशलेम की अपनी यात्रा में कई लोगों के साथ था। सम्भवतया चंदा देने वाली मण्डलियों के प्रतिनिधियों के साथ [देखें 2 कुरिन्थियों 8:23] पौलुस ने चंदा उन्हीं के हाथ क्यों नहीं भेजा जबकि वह खुद रोम को चला गया? इस प्रश्न का उत्तर ''मैं यह काम पूरा करके ... उनको यह चंदा सौंपकर'' शब्दों में मिलता है। (इन शब्दों को पढ़कर मुझे अपने मित्रों नोरमन और कैथरिन मार्टिन का ध्यान आता है, जिनके पास एक बड़ा सा भाग रहता है और जो हर सितम्बर में डिब्बे बन्द करने में कई घंटे बिताते हैं। फल और सब्जियों को जारों में *सील* करने तक उनका काम पूरा नहीं होता।) पौलुस को लगा कि उसे *व्यक्तिगत रूप से* ''सील'' करना आवश्यक है।[32] उसकी ज़िम्मेदारी चंदा देने वालों को सुनिश्चित करना था कि उनका धन सही हाथों में गया है (देखें 2 कुरिन्थियों 8:19, 20)। इसके अलावा यरूशलेम की कलीसिया के कुछ अगुओं के साथ उसके सम्बन्ध (जैसे याकूब [गलातियों 1:19; 2:9; प्रेरितों 21:18]) ने यहूदी मसीहियों को यह भेंट स्वीकार करने में सहायता की हो सकती है।

अन्त में जब यहूदियों के लिए अन्यजातियों की ''प्रेम भेंट सील कर दी गई'' तो पौलुस ने ''स्पेन को जाते हुए [रोम] में जाने'' की योजना बनाई।[33] स्पेन ''पश्चिम में रोम का सबसे पुराना इलाका और संसार के उस भाग में रोमी सभ्यता का प्रमुख बुर्ज था।''[34] (कइयों का विचार है कि यह वह इलाका था जिसे पुराने नियम में ''तरसुस'' कहा गया है।[35]) हमारे लिए पौलुस की

योजना की विशालता को समझना कठिन है। कुरिन्थुस से यह यरूशलेम की ओर आठ सौ से अधिक मील होगा। यरूशलेम से यह रोम की ओर पन्द्रह सौ मील के लगभग और स्पेन की ओर और सत्रह सौ या इससे अधिक मील होगा। पौलुस (सरसरी तौर पर) तीन हज़ार से अधिक मील सफर की घोषणा कर रहा था। प्राचीन काल के सफ़र की अनिश्चितता और खतरों को ध्यान में रखते हुए, तो उसकी प्रस्तावित यात्रा विस्यमयकारक है! परन्तु पौलुस ने समस्याओं पर नहीं बल्कि क्षमता पर ध्यान केन्द्रित रखा।

> [पौलुस] के लिए कहा जाता है कि वह ''आगे के इलाके का ध्यान रखता'' था। उसने लंगर पर कभी जहाज़ नहीं देखा पर वह उसे उस पर रखकर सुसमाचार को समुद्र के पार रहने वालों तक ले जाना चाहता था। उसने दूर आसमान में पहाड़ों की शृंखला कभी नहीं देखी और वह उनके पार जाकर उन लोगों के पार क्रूस की कहानी ले जाना चाहता था जिन्होंने उसे कभी सुना नहीं था। इस समय पौलुस प्रेम के विचारों से भरा हुआ था।[36]

स्पेन के लोग रोमी सम्राज्य के प्रभावशाली लोगों में से थे। सुसमाचार लेकर पहुंचने के लिए स्पेन एक महत्वपूर्ण इलाका था और साम्राज्य के बढ़ते रहने के रूप में पश्चिम तक सुसमाचार पहुंचाने के लिए यह आरम्भ करने का केन्द्र हो सकता था। मैरिल सी. टैनी ने लिखा कि पौलुस ''मिशनरी इवैंजलिज़्म के राजनेता जैसे अभियान को जारी रखा। रोम और स्पेन यात्रा के लिए उसकी योजनाओं से पता चला कि वह शाही विश्वास के साथ शाही राष्ट्रमण्डल को मिलाना चाहता था।''[37]

परन्तु पहले उसने रोम में आगे को जाना देखा। उसने वहां के मसीही लोगों को बताया, ''मैं जानता हूं [पूरा भरोसा रखता हूं], कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा, तो मसीह की पूरी[38] आशीष[39] के साथ आऊंगा'' (रोमियों 15:29)। उसका विश्वास था कि यीशु उनके समय को आशीष देगा (देखें 1:11, 12)। इस प्रकार पौलुस ने अपने रोम में रहने वाले अपने भाइयों और बहनों को अपनी योजनाओं तथा उनसे मिलने की अपनी तड़प के बारे में बताया।

सारांश

अध्याय 15 की अन्तिम चार आयतों का अध्ययन करते हुए हम पौलुस की यात्रा पर बात करना जारी रखेंगे। इस पाठ का अधिकतर भाग पौलुस के सफ़र की योजनाओं पर है, मुझे उम्मीद है कि आप रोम के मसीही लोगों के साथ *संवाद* की उसकी इच्छा से प्रभावित हुए हैं। क्या उसके संवाद से उसको वह मिला जो वह पाना चाहता था? हमें नहीं मालूम। अच्छे संवाद के लिए अच्छे ''भेजने वालों'' के साथ-साथ अच्छे ''पाने वाले'' होने आवश्यक हैं, परन्तु कम से कम पौलुस ने प्रयास तो किया। हमें नहीं मालूम कि इटली में पहुंचने पर रोम के मसीही लोगों ने पौलुस का स्वागत किया या नहीं (प्रेरितों 28:14, 15)।

आज के समाज, परिवारों, विवाहों तथा कलीसिया में बेहतर संवाद की अत्यधिक आवश्यकता थी। फिल्मों के प्रसिद्ध डायलॉगों में से एक *फूल हैंड लूक* से है, जिसमें जेल का व्यंग्य प्रिय वार्डन मुख्य पात्र से कहता है, ''हमारे पास यहां जो है वह संवाद की असफलता है।'' जब आप के सम्बन्धों में कोई समस्या आए तो इसे ''संवाद की असफलता'' न बनने दें।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

इस पाठ का शीर्षक ''संवाद की कला'' भी हो सकता है। कई लेखक इस विचाराधीन आयत को ''पौलुस के अन्तिम शब्द'' या ''पौलुस की यात्रा की योजनाएं'' ही कहते हैं। जो आसान लगे आप वही ढंग अपना सकते हैं।

आप इस पाठ को ''अनुत्तरित प्रार्थनाएं'' नामक शीर्षक वाले पाठ से मिला सकते हैं। ऐसा करने पर आप तीन विभाजनों अर्थात उद्देश्य का प्रकाशन (आयतें 14-22); योजनाओं का पाठ (आयतें 23-29); प्रार्थनाओं के लिए याचना (आयतें 30-33) कर सकते हैं।

जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने हमारे वचन पाठ के भाग को विभाजित करने के लिए पौलुस की सेवकाई का विषय इस्तेमाल किया: उसकी याजकाई वाली सेवकाई (आयतें 16, 17), उसकी सामर्थी सेवकाई (आयतें 18, 19क) और उसकी अगुआई देने वाली सेवकाई (आयतें 19ख-22)।[10]

टिप्पणियां

[1]इस पद्य को जहां आप रहते हैं अपनी आवश्यकता के अनुसार बदल लें। [2]KJV में आम तौर पर *koinonia* के क्रियारूप का अनुवाद ''संप्रेषण'' शब्द के साथ किया जाता है, जबकि NASB में इसी यूनानी शब्द का अनुवाद आमतौर पर ''बांटना'' के रूप में किया जाता है। [3]''चिता'' *noutheto* से लिया गया है जिसका मूल अर्थ ''मन में डालना'' है। (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 13.) इस शब्द का सम्बन्ध दूसरों को याद दिलाने से है कि परमेश्वर ने क्या कहा है। [4]हम में से कई लोग तभी प्रसन्न होंगे यदि इन शब्दों का इस्तेमाल हमारे जीवनों की समीक्षा के रूप में किया जा सके: ''भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर ... [दूसरों] को चिता सकें।'' [5]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ दि न्यू टैस्टामेंट,* संपा. ग्रेहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रैडरिच, अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 1183-84 में जी. फिज़र, *''tolmaô.''* [6]याद दिलाना प्रचारक या सिखाने वाले के काम का आवश्यक भाग है, परन्तु याद दिलाने वालों को ताज़ा और उपयुक्त बनाना भी आवश्यक है। बार-बार वही बातें एक ही ढंग से कहने की कोशिश न करें। [7]देखें प्रेरितों 17:21; 2 तीमुथियुस 4:3. [8]पौलुस ने आयत 16क में ''सेवक'' के लिए सामान्य यूनानी शब्द का इस्तेमाल नहीं किया बल्कि *leitourgos* के क्रिया रूप का इस्तेमाल किया जो याजक के रूप में सेवा करने के विचार वाला शब्द था। इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''मसीही लोग और मानवीय सरकार (13:1-7)'' में 13:6 की चर्चा में ''सेवकों'' पर नोट्स देखें। [9]फिर आयत 16ख में पौलुस ने ''सेवक'' के लिए सामान्य यूनानी शब्द का इस्तेमाल नहीं किया। ''याजक के रूप में सेवा करना'' *hierourgeo* से लिया गया है जिसका अर्थ ''याजकाई सेवा के रूप में सेवा करना'' है (*hieros* [''पवित्र''] और *ergon* [''काम''] से) (वाइन, 411)। [10]''बड़ाई'' शब्द *kauchesis* से लिया गया है (''शेखी मारने का कार्य'' [वही, 268])। KJV में आम तौर पर इस शब्द का इस्तेमाल ''महिमा'' या ''महिमा करना'' के रूप में हुआ है।

[11]पौलुस ने कई आश्चर्यकर्म किए। उदाहरण के लिए देखें देखें प्रेरितों 13:6-12; 14:3, 8-10; और 19:11, 12. [12]वाइन, 682. [13]कई लोग चकित होते हैं कि उस नगर में पौलुस का काम सीमित था और काम करने का उसका केन्द्र अन्ताकिया था तो फिर आरम्भ के रूप में पौलुस ने ''यरूशलेम'' का इस्तेमाल क्यों किया। पौलुस उन स्थानों का नाम बताकर जिनसे उसके सुनने वाले परिचित थे, अपने काम की सीमाएं बता रहा होगा। [14]इल्लुरिकुम का इलाका सर्बिया और मौंटिनेगरो (पुराना नाम युगोस्लाविया) और अल्बानिया के भागों तक था। [15]जिस देश में आप रहते हैं वहां के दो स्थानों का इस्तेमाल करें, जिसमें एक तो देश के एक दिशा में हो और दूसरा उसके विपरीत दिशा

में। [16]यह दृश्य संसार के हर भाग में एक जैसा नहीं होगा। जहां आप रहते हैं यदि वहां यह असामान्य लगे तो इसे असंवाद के किसी और उदाहरण में बदल लें या उदाहरण को निकाल ही दें। [17]''उमंग'' शब्द *philotimoumai* (*philos* [''प्रेम'' के साथ *time* [''आदर'']) से लिया गया है। कई अनुवादों में इस शब्द का इस्तेमाल ''अभिलाषा'' किया गया है। इस शब्द का अनुवाद ''लक्ष्य'' भी हो सकता है। लोगों की अलग-अलग अभिलाषाएं और उमंगें होती हैं। पौलुस की एक ही अभिलाषा थी और वह सुसमाचार सुनाना था। (वाइन, 21.) [18]1966 से, *स्टार ट्रेक* शृंखला में ''दिलेरी से वहां जाना जहां कोई मनुष्य पहले नहीं गया'' के मिशन पर अन्तरिक्ष यात्रियों की विज्ञान की काल्पनिक कहानियां दी हैं। [19]रिउल लेम्मन्स, ''111,400,000 पीपल एण्ड वन प्रीचर,'' *फर्म फाउंडेशन* (3 जुलाई 1956): 426. [20]''लालसा'' एक मज़बूत यूनानी शब्द से लिया गया है। *रोमियों, 1* पुस्तक में ''मैं सुसमाचार सुनाने को उत्सुक हूं (1:8-15)'' पाठ में 1:11 में ''उत्सुक'' पर नोट्स देखें।

[21]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गाड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 385. [22]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ़. अर्ंट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1957), 716. [23]''परन्तु अभी तो मैं जाता हूं'' संकेत देता है कि उसका जाना पक्का था। [24]जैसा कि पहले कहा गया था ''चंदा'' *koinonia* से लिया गया है। दान देना प्रभु के काम में सहायता करने में *योगदान* देने का एक ढंग है। [25]कई लेखकों का मत है कि यरूशलेम की कलीसिया के आरम्भिक दिनों में मसीही लोगों की असाधारण उदारता (प्रेरितों 2:44, 45) से वहां के मसीही लोगों की आर्थिक समस्याओं में योगदान दिया। क्योंकि यरूशलेम के मूल मसीही लोगों में से अधिकतर को नगर में से बाहर निकाल दिया गया था (प्रेरितों 8:1), इसलिए यह समझ पाना कठिन है कि बाद में वहां रहने वाले मसीही लोगों पर आरम्भिक कार्य से क्या प्रभाव पड़ा। [26]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमन एण्ड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इनिलोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 283. [27]मकिदुनिया और अखाया यूनान के पूर्वी और दक्षिणी राज्य थे। फिलिप्पी और थिस्सलुनीके मकिदुनिया में थे जबकि अखाया कुरिन्थुस में था। [28]यरूशलेम में दान लेकर जाने के समय पौलुस के साथ जाने वालों में एशिया के इलाके के दो लोग थे। इनमें से एक इफिसुस से था (देखें प्रेरितों 21:29)। [29]शायद पौलुस इस तथ्य की बात कर रहा था कि अन्यजातियों को वे आशिषें बांटने की अनुमति दी गई जिनकी प्रतिज्ञा पहले यहूदियों से की गई थी। यहूदियों द्वारा सुसमाचार को ठुकराने के कारण अन्यजातियों में सुसमाचार ले जाने का अवसर मिला। *रोमियों, 4* पुस्तक में ''घमण्ड का कोई कारण नहीं (रोमियों 11:13-24)'' और ''परमेश्वर की महिमा हो (रोमयिों 11:25-36)'' पाठों में रोमियों 11:17, 31 पर नोट्स देखें। [30]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 497.

[31]''यह चंदा सौंप कर'' का अर्थ ''अन्यजाति मसीहियों का चंदा'' है। पौलुस ने अन्यजाति मसीहियों के चंदे को उनके करुणा भरे और उदार मनों के फल के रूप में देखा। [32]जहां मैं रहता हूं वहां हम कहेंगे ''सौदा पक्का।'' [33]अगले एक पाठ में हम चर्चा करेंगे कि पौलुस की स्पेन जाने की योजनाएं पूरी हुईं या नहीं। [34]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 14. [35]मू, 495. तरसुस का एक प्रसिद्ध हवाला योना 1:3 है। [36]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 3. [37]मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1961), 308. [38]''पूरी'' *pleroma* से लिया गया है। फिर से, *pleroma* में ''पूर्ण अंक'' का कोई विचार नहीं है। *रोमियों, 4* पुस्तक में आए पाठ '' 'सारा इस्राएल उद्धार पाएगा'? (11:25, 26क)'' में 11:25 पर नोट्स देखें। [39]KJV और NKJV में ''मसीह का सुसमाचार'' है। [40]स्टॉट, 379-81.